SWAR SINDHU: NATIONAL PEER-REVIEWED/REFEREED JOURNAL OF MUSIC
A UGC CARE LISTED JOURNAL
ISSN 2320-7175 (O) | VOLUME 12, ISSUE 03, DECEMBER, 2024
http://swarsindhu.pratibha-spandan.org

सितार वाद्य का सफ़रनामा

DR. GAURAV SHUKLA

Assistant Professor, Sitar, Department of Music, Jai Narayan Vyas University, Jodhpur

सारांश

भारतीय संगीत में वाद्य वादन की अपनी एक विशिष्ट परंपरा प्राचीन काल से चली आ रही है ।प्राचीन काल में अनेक प्रकार के वाद्यों का वादन होता था। इस क्रम में आचार्य भरत ने अपने ग्रंथ "नाट्य शास्त्र" में वाद्यों की चार श्रेणियां बताई हैं जो निम्न हैं –(1) तत वाद्य (तार वाले वाद्य).(2)अवनद्ध वाद्य (ताल वाद्य), (3)सुषिर वाद्य (वायु वाद्य), और (4) घन वाद्य (ठोस वाद्य), मेरे शोध पत्र का विषय तत वाद्य सितार के उत्पत्ति और विकास से संबंधित हैं। सितार के उत्पति के विषय में विद्वानों के विभिन्न मत हैं, कुछ विद्वानों का मानना है कि सितार वाद्य की उत्पति मध्यकाल में हुआ परन्तु कुछ विद्वान इसकी उत्पत्ति प्राचीन काल के त्रितंत्री वीणा से मानते हैं । मध्यकाल में इस प्रकार के तीन तार वाले वाद्य का उल्लेख "दरगाही कूली" के पुस्तक "मुरक्का – ऐ -दिल्ली" में और "ख्वाजा हसन निजामी" के पुस्तक "पुरानी दिल्ली के हालात" में खुसरो खां द्वारा निर्मित सहतार की चर्चा की हैं। वे लोग लिखते हैं कि तीन तार वाला यह वाद्य अदभुत एवम् विचित्र था, तभी लोग इसे "विचित्र वस्तु "कहकर पुकारते थे।विचित्र वस्तु, सहतार से सितार तक का सफ़रनामा एवम् सितार में प्रयुक्त होने वाली बंदिशों की वादन शैली का वृहद वर्णन करने का प्रयास करूंगा जिससे सितार वाद्य के जिज्ञासु की जिज्ञासा शांत हो सके।

मुख्य बिंदु *– सितार, तत ,वाद्य, संगीत,*

भूमिका

सितार भारतीय तत् वाद्यों की परंपरा में वर्तमान समय का बहुत ही लोकप्रिय वाद्य है । इसके अर्थ, उत्पत्ति एवं विकास के बारे में विभिन्न विद्वानों के मत- मतांतर प्रचलित है। जिनमें से कुछ मत इस प्रकार है –

मानक संगीत कोश के अनुसार- सितार वीणा की तरह एक वाद्य है। जिसके तारों को तर्जनी में पहनी हुई मिजराब से बजाते हैं और इस पर राग -रागिनियो का वादन करते हैं[1] । डिक्शनरी ऑफ म्यूजिक के अनुसार-An Indian Long Necked Lute With Movable Frets and Originally with Three Strings.Now with 4-7 and Some Time's Sympathetic Strings Also,It is Played With a Long Neek and Two Sets Metal Strings.[2] फारसी एनसाइक्लोपीडिया "लोघाट नामा"में शब्द सेहतार का उल्लेख मिलता हैं, जो की कानूनी भाषा में प्रचलित है- "दर ज़बान कानूनी नीज सेहतार"[3]

इस प्रकार सितार शब्द को लेकर विभिन्न मत है। सामान्य भाषा में सितार का परिचय इस प्रकार है,सर्वप्रथम सितार सहतार नाम से जाना जाता था फारसी शब्द सहतार का अर्थ सह मतलब तीन और तार मतलब तार ,इस प्रकार तीन तार वाला वाद्य सहतार को ही बाद में सितार बोला जाने लगा ।

सितार की उत्पत्ति एवं विकास

सितार वाद्य की उत्पत्ति कब,कहां और कैसे हुई यह संगीत जगत में शोध का विषय रहा है। सितार वाद्य की उत्पत्ति के संबंध में अनेक भ्रांत धारणाएं संगीतज्ञों तथा संगीत प्रेमियों में विद्यमान है। सितार वाद्य का प्रारंभिक रूप क्या था और कैसे-कैसे इसका विकास हुआ, इसको उन्नति पथ पर ले जाने वाले किन-किन विद्वानों ने इसके विकास में योगदान दिया ,इस वाद्य के आविष्कारक वास्तव में कौन है यह भी स्पष्ट रूप से नहीं कहा जा सकता। सितार वाद्य की उत्पत्ति के संबंध में विभिन्न मत पाए जाते हैं जिसमें दो मत अधिक प्रचलित है-

1-सितार के आविष्कारक अमीर खुसरो
2-सितार के आविष्कारक खुसरो खान

1- वर्मा, श्री रामचंद्र, मानक हिंदी कोश ,पांचवा खंड ,पृष्ठ संख्या, 252

2 -निर्मला देवी, डिक्शनरी ऑफ म्यूजिक ,पृष्ठ संख्या ,208

3 -लोघाटनामा एनसाइक्लोपीडिया, श्रृंखला संख्या,83, पृष्ठ संख्या ,293

सितार के आविष्कारक अमीर खुसरो मत का वर्णन करेंगे-

सितार वाद्य के आविष्कारको में अमीर खुसरो का नाम मुख्य रूप से लिया जाता है। अमीर खुसरो खिलजी वंश के शासक अलाउद्दीन खिलजी के दरबारी कवि एवं संगीतज्ञ के माने जाते थे। इन्होंने इस वाद्य का नाम 'सहतार' रखा परंतु विद्वानों का मानना है कि अमीर खुसरो ने अपनी पुस्तक 'आजूजे खुसरवी' नामक ग्रंथ में सहतार नमक वाद्य का कहीं भी उल्लेख नहीं किया है।सहतार तीन तार वाला वाद्य था ।यह तीन तार क्रमशः सा – प – तथा तार सप्तक के सा में मिलाया जाता था। वर्तमान समय में अमीर खुसरो को ही सितार वाद्य का आविष्कारक माना जाता है।

दूसरा मत जो सर्वाधिक प्रचलित है उसके अनुसार सितार का आविष्कारक खुसरो खान को माना जाता है। 18 वीं शताब्दी में नवाब दरगाह कुली खान की पुस्तक 'मीराते दिल्ली' में तीन तार वाले वाद्य सेहतार या सहतार का सर्वप्रथम उल्लेख है। मोहम्मद शाह रंगीले के युग (1719-41ई.) में नेमत खान 'सदारंग'के छोटे भाई खुसरो खाने सबसे पहले तीन तारों वाले वाद्य (आधुनिक सितार का प्रारंभिक रूप)का निर्माण किया। चूंकि इसमें तीन तार थे अतः इसे सहतार कहा गया । दरगाह कुली खान ने "मुरक्का – ऐ -दिल्ली"में और ख्वाजा हसन निजामी ने' पुरानी दिल्ली के हालात'में खुसरो खान द्वारा निर्मित सितार की चर्चा है। वे लोग लिखते हैं कि तीन तार वाला यह साज अदभुत और विचित्र था तभी तो लोग इस विचित्र वस्तु का कर पुकारते थे[1]।

उक्त तथ्यात्मक उदाहरण से यह स्पष्ट है कि सितार का आविष्कार हुए 300 वर्ष से अधिक नहीं हुआ है। यह भी सर्वविदित बात है कि जब तक किसी आविष्कार का प्रचार भली-भांति नहीं हो जाता है और समाज में वह रच – बस नहीं जाता तब तक उस आविष्कार के विषय में विशद चर्चा नहीं होती है। संगीत विद्या के विषय में एक विशेष बात है उसका कोई गायन- वादन शैली या आविष्कृत वाद्य जब तक दो-तीन पीढ़ी पार नहीं कर लेता है तब तक उसके व्याकरण का निर्धारण नहीं हो पाता हैं। क्योंकि दो- तीन पीढ़ी तो वह प्रयोग और परिवर्तन में ही व्यतीत कर देता है।

खुसरो खान के सितार (जिसे विचित्र वस्तु भी कहा गया) में सर्वप्रथम तीन तार थे, इन तीन तारों में पहला तार लोहे का था जो सा में मिलाया जाता था, दूसरा तार पंचम में और तीसरा तार सप्तक के सा में मिलाया जाता था । तीन तार वाले सितार में आठ पर्दे थे। प्रारंभ में सितार का प्रयोग संगत वाद्य में ही किया जाता था । न्यास स्वर को, जिस पर गायक ठहरता था ,उसको कायम रखने के लिए 'रिक्त पूरक' के रूप में इस वाद्य का प्रयोग किया जाता था । इस प्रकार संगत करने वाला सितार वादक, गीत के स्वाभाविक ठहराव को भरता था और इस दौरान वह बाएं हाथ की उंगलियो को न्यास स्वर पर रखता, जहां गायक रुक जाता वहां बाएं हाथ से 'दा रा' बजाता था। इस तरह सितार वादक पूर्णता से गायन का अनुसरण नहीं करता था । वीणा के ही अनुसार सितार के प्रारंभिक वादन में भी दाएं हाथ का प्रयोग बड़े जोरदार से किया जाता था। बाएं हाथ की गति धीमी और प्रारंभिक थी। दाएं हाथ का प्रयोग बोल- स्वरूप बनाने के लिए किया जाता था जबकि बाएं हाथ प्रयोग गौण था ।

18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध से लेकर 19वीं शताब्दी के उत्तरार्ध तक सितार वादन में बराबर परिवर्तन होते रहे। सितार पर वीणा शैली का आलाप नहीं हो पाता था , अतः सुरबहार पर आलाप अंग तथा गीत अंग सितार पर प्रयुक्त होता था । वीणा के आधार पर प्राप्त सामग्री का वादन सितार पर संतोषप्रद सिद्ध नहीं हो रहा था अतः सितार में धीरे-धीरे परिवर्तन होता रहा और सितार वादन की नई शैली 'गत' का विकास हुआ।

सहतार (सितार) के विकास का प्रथम चरण जो विशिष्ट भी है खुसरो खान के पौत्र ,फिरोज खान 'अदारंग' के पुत्र उस्ताद मसीत खान ने पूरा किया । अभी तक तीन तार का सितार यानी सहतार ही बजाया जा रहा था । मसीत खान ने चार तार और जोड़कर पर्दों की संख्या 16 से 23 कर दिया। सहतार अब 'सत्तार के नाम से पुकारा जाने लगा।मसीत खान ने ही सितार के एकल वादन के लिए गतो का निर्माण किया। इन गतो के निर्माण में उन्होंने विलंबित लय को प्रधानता दी। इसलिए आज भी विलंबित गत को मसीतखानी गत कहते हैं । मसीत खान के पूर्व भी

1 -भटनागर, रजनी, सितार वादन की शैलियां,पृष्ठ संख्या, 53

गत और तोड़ा बजाया जाता था। मगर यह पूरी तरह गायन पर निर्भर था। मसीत खान के भांजे उस्ताद दूल्हा खान और दूल्हा खान के दामाद रहीमसेन (18 वीं शताब्दी के उत्तरार्ध) ने सितार के पर्दों की संख्या 23 से घटाकर 19 कर दी। इस तरह सितार अचल थाट से चल थाट का बन गया। रहीम सेन ने सितार में अन्य परिवर्तन भी किया जो बड़े महत्वपूर्ण थे। मसीत खान के सितार में गत ,तोड़ा ही बजाने का प्रचलन था। गत ,तोड़ो के साथ बीनकारी का जोड़ तथा मीड का काम रहीम सेन ने ही शुरू किया। रहीम सेन ने सितार में ऊपर बायी ओर एक छोटी तुम्बी भी लगाई थी। रहीम सेन पुत्र अमीर सेन (जन्म समय 1713) ने ध्रुपद अंश की गायकी और वीणा के तरीके से आलाप और जोड़ का वादन प्रारंभ किया था। इसके बाद भी ख्याल गायकी ढंग की द्रुत गत में तान लगाते थे,जिसे फिकराबंदी कहा जाता था। इसी काल में सितार वादन में एक नई शैली ने जन्म लिया जिसे रजाखानी गत कहा गया इस गत के आविष्कारक जौनपुर के सेनिया परंपरा के उस्ताद मसीत खान के शिष्य उस्ताद गुलाम रजा खान को माना जाता है इस गत की लय द्रुत थी। द्रुत चाल के कारण इसे चंचल प्रकृति की शैली स्वीकार किया गया। इस शैली में रजाखान ने मिजराब के आघातो से बोलो के कटाव पर विशेष ध्यान दिया। दा और रा को विभिन्न गतियों में बजाकर दिर दा दिर दा रा आदि प्रकार के बोलो को बजाकर गति को मध्य और द्रुत लय का रूप दिया। इस प्रकार सितार में दो प्रमुख गतो का निजात हुआ ।सन 1800 से 1900 तक के काल में सितार में जहां अनेक परिवर्तन हुए, वही उसकी वादन शैली में भी विकास हुआ। इसी काल में इमदाद खान ने सितार पर मीड का प्रयोग शुरू किया। इनायत खान जो की इमदाद खान के सुपुत्र थे तरब के तारों का प्रयोग की प्रणाली का विकास किया।

इमदाद खान ने अपने बाज में ख्याल और ठुमरी अंग की गायकी को प्रधानता दी। इनके नाम से इमदादखानी बाज का प्रचलन हुआ। इस बाज में झाले के बोलो की विशेषता थी। इसी समय इनायत खान से सितार पर तोड़ो के साथ तिहाई का प्रयोग प्रारंभ किया। समकालीन कलाकार उस्ताद बाबू खान ने उपज तानो का प्रयोग करके सितार के वादन को और अधिक संवारा। इस काल में तानो ने भी जन्म लिया, मीड,घसीट आदि विभिन्न प्रकार से स्वरों को निकालकर आलाप को सजाने और राग का विस्तार प्रदर्शित करने की प्रक्रिया का जन्म हुआ। सितार वाद्य इस काल में प्रगति की ओर अग्रसर होकर पूर्णता की ओर बढ़ा।

20वीं शताब्दी के प्रारंभ के दशकों तक आते-आते सितार वादन की प्राविधिकी जहां पूर्णता को पहुंच चुकी थी वहीं उसकी कलात्मक दृष्टि भी विकसित हो चुकी थी। इस काल तक आते-आते सितार वादन के घराने भी अपना रूप आकार धीरे-धीरे ले रहे थे। इन घरानों में इटावा का इमदाद खान घराना अपना विशेष स्थान रखता था। इस घराने के उस्ताद विलायत खान जैसे कलाकारों ने कंठ संगीत की शास्त्रीयता के सूक्ष्मतम स्वर, मात्राओं एवं गहनतम भाव -विन्यासों को तंत्र में उतरने के सफल प्रयास किया। उनके वादन में बाएं हाथ का महत्व दाएं हाथ के समान ही बढ़ गया। इसी से कंठ संगीत का सूक्ष्मतम अंश भी वे प्रस्तुत कर सके। सितार के विकास क्रम में पंडित रविशंकर ने अति मंद्र का एक तार और जोड़कर वीणा का कृन्तन अंग भी समाविष्ट कर दिया तथा उसके विभिन्न लयकारियों से सजाया। इसके साथ ही उन्होंने अन्य वाद्यों की विशेषताओं को भी सितार में उतारकर,उसे पूर्णता प्रदान करने में महत्वपूर्ण योगदान दिया।

वर्तमान समय में सितार वाद्य ने भारत में ही नहीं अभी पूरे विश्व में अपना महत्वपूर्ण स्थान बना लिया है। इसका श्रेय पंडित रवि शंकर जी एवं उस्ताद विलायत खान साहब को जाता है। वर्तमान समय में सितार वादकों में मुख्य रूप से उस्ताद शाहिद परवेज, उस्ताद शुजात खान, पंडित नीलाद्री कुमार, पंडित हरविंदर शर्मा आदि कलाकार सितार संरक्षण एवं संवर्धन में अपना योगदान दे रहे हैं। इस तरह सहतार ने सितार तक का सफर पूरा किया।

संदर्भ

1-भटनागर, रजनी, सितार वादन की शैलियां, कनिष्क प्रकाशन, नई दिल्ली, द्वितीय संस्करण, 2014
2-बाला,डॉ.किरण , सितार कादंबरी, प्रासंगिक प्रकाशन, नई दिल्ली, प्रथम संस्करण, 2012
3-ठाकुर, वंदना, तरबदार सितार की उत्पत्ति ,विकास एवं महत्व, कनिष्क प्रकाशन ,नई दिल्ली, सन 2009
4-शाह, राजेश, सितार विज्ञान :शास्त्र एवं प्रयोग, कला प्रकाशन, वाराणसी, सन 2013